मणिपुर की ऐकेडिमिक यात्रा का लेखकीय साक्ष्य

प्रो. यशवंत सिंह
प्रोफेसर , हिन्दी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय
काँचीपुर, इम्फाल (मणिपुर)

हिंदी में साक्षात्कार-साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर एवं धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़ (उ.प्र.) में अपना प्राध्यापकीय जीवन पूर्ण करने वाले प्रेमकुमार जी की दृष्टि में पूर्वोत्तर भारत का मणिपुर राज्य पूरब का स्विट्ज़रलैण्ड है। जबकि अज्ञेय जी ने 'एक बूँद सहसा उछली' नामक यात्रा-वृतात्त में कश्मीर को भारत का स्विट्ज़रलैण्ड कहा था। यूरोप के स्विट्ज़रलैण्ड को झीलों का देश कहा जाता है। उसका प्रसिद्ध नगर जेनेवा लेमान झील पर बसा हुआ है, जिसकी तुलना कश्मीर की डल झील एवं मणिपुर की लोक्ताक झील से की जा सकती है। स्विट्ज़रलैण्ड एक शांतिप्रिय तटस्थ देश है, उसकी राजधानी जेनेवा अंतरराष्ट्रीय शांति सम्मेलनों-समझौतों के लिए प्रसिद्ध है। इस दृष्टि से देखे तो भारत का शिमला शहर इसके लिए उपयुक्त जान पड़ता है। जबकि श्रीनगर एवं इंफाल शहर अभी इस दृष्टि से काफी पीछे हैं। अज्ञेय जी के विचार में 'घुमक्कड़ी एक प्रवृत्ति ही नहीं, एक कला भी है। देशाटन करते हुए नये देशों में क्या देखा, क्या पाया, यह जितना देश पर निर्भर करता है, उतना ही देखने वाले पर भी।' अज्ञेय जी का यह कथन प्रेमकुमार जी द्वारा लिखित यात्रा-वृतांत – 'यात्रा पूरब के स्विट्ज़रलैण्ड की' (साहित्य रत्नाकर, कानपुर, प्रथम संस्करण-२०२०) पर पूर्णत: चरितार्थ होता है।

दरअसल मणिपुर विश्वविद्यालय, इंफाल के हिंदी विभाग में अगस्त-२०१० के अंतिम दिनों में 'पूर्वोत्तर भारत की भाषाएँ (मणिपुरी व असमियाँ)' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई थी। तत्कालीन विभागाध्यक्ष के बुलावे पर प्रेमकुमार जी ने इस दो-दिवसीय संगोष्ठी में सहभागिता की तथा इस दौरान लगभग एक सप्ताह तक उनका मणिपुर विश्वविद्यालय के काँचीपुर परिसर में प्रवास रहा। विदित हो कि काँचीपुर मध्यकाल में मणिपुरी रासलीला की जन्म एवं लीला भूमि तथा आधुनिक काल में मणिपुरी नवजागरण के रचनाकार डॉ. कमल की जन्म एवं कर्मभूमि रहा है। प्रेमकुमार जी ने अपने मणिपुर प्रवास के दौरान विश्वविद्यालीय प्राध्यापकों एवं स्थानीय निवासियों से वार्त्तालाप किया तथा कुछ स्थानीय दर्शनीय स्थलों, यथा-इंफाल शहर के वृहद महिला बाजार (स्थानीय इमा कैथेल) आदि का भ्रमण किया। इन सबसे प्राप्त अनुभवों को उन्होंने अपने इस यात्रा-वृतांत की विषयवस्तु बनाया, जिसमें उनके निज अनुभवों-विचारों की भी महती भूमिका है।

३० अगस्त, २०१० को प्रात: संगोष्ठी का उद्घाटन-सत्र प्रारम्भ हुआ, इसमें लेखक ने किंचित सहमते-से जल्दी-जल्दी लेकिन काव्यमयी भाषा में अपना वक्तव्य पढ़ा। जिसमें उन्होंने मणिपुर को 'पूरब का स्विट्ज़रलैण्ड', अटारी पर स्थित फूल और अलंकारों-मणियों की भूमि कहा तथा यहाँ की प्रकृति-संस्कृति की प्रशंसा करते हुए भाषा के जोड़ने-मिलाने के वैशिष्ट्य को रेखांकित किया।' लेखक के अनुसार इस संगोष्ठी की व्यवस्था में संलग्न हिंदी विभाग की मणिपुरी छात्राओं के हिंदी बोलने के ढंग, उच्चारण और उनके अधिकार एवं उत्साह भाव ने सभी आगन्तुक अतिथियों को प्रभावित किया। हिंदी बोलने के उनके अंदाज की लगभग सभी ने मुक्तकंठ से सराहना की थी। यही पर लेखक मणिपुरी खानपान की चर्चा करते हुए मछली की सब्जी, मणिपुरी चावल, बेसन के पकौड़े, फीका पेठा, काले चावल की खीर का उल्लेख भी करते हैं। लेकिन दोपहर के खाने में चपातियों का अभाव उन्हें आधा पेट भूखा रह जाने को बाध्य करता है।

विश्वविद्यालय अतिथि गृह के कमरे में रात्रि विश्राम के समय लेखक की सर्वहारा वर्ग के प्रति चिंतनग्रस्त पीड़ा अभिव्यक्त होती है – 'ये गेस्ट हाउस, ये विश्वविद्यालय ही क्या, हमारे कितने ही शहर, महानगर, हमारे प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्रियों, असफरों के आवास वहाँ के किन मूल निवासियों-आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन को हथिया-कब्जाकर बने हैं।' अगले दिन सुबह अतिथि गृह से बाहर सड़क पर निकलते ही असम राइफल्स के गश्ती जवानों को देखकर लेखक के मन में भय का मुन्ना-सा भाव अंदर ही अंदर कुलबुला-कसमसा उठता है। उन्हें विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर बड़ी तदाद में असम राइफल्स के जवानों की तैनाती पर भी डर-सिहरन महसूस होती है। यहाँ पर वास्तविक तथ्यों से अनजान लेखक अपनी वैचारिक प्रतिबद्धताओं से कुछ ज्यादा ही बंधा नजर आता है। क्यों कि मणिपुर विश्वविद्यालय परिसर के लिए जिन किसानों की भूमि अधिगृहीत की गयी थी, उनको पर्याप्त मुआवजा राशि भुगतान करने के साथ ही, उनके परिवार के किसी एक सदस्य को भी विश्वविद्यालय ने नौकरी में रखा हुआ है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजक हिंदी विभाग में कार्यालय सहायक के रूप में कार्यरत एस. ब्रोजेन्द्रो सिंह इसके प्रत्यक्ष लाभार्थी हैं। वहीं विश्वविद्यालय की सुरक्षा व्यवस्था में असम राइफल्स के जवान तैनात नहीं हैं। बल्कि इसके लिए विश्वविद्यालय ने अपने सुरक्षाकर्भी नियुक्त कर रखे हैं, जो उनके रोजी-रोजगार का माध्यम है तथा इसमें पुरूषों के साथ महिला सुरक्षाकर्मियों की भी पर्याप्त सहभागिता है। लेखक द्वारा 'कुछ खाने की तलाश' का उपक्रम उनकी मानवीय संवेदनशीलता को उजागर करता है। इसी क्रम में उनकी भेंट विश्वविद्यालय गेट के पास ही घर में होटल चला रहे एक ऐसे नवयुवक एवं उसकी माँ से होती है जो लेखक की कुछ खाने की इच्छा पूरी करते हैं। साथ ही, लेखक बातों-बातों में ही उस परिवार से आत्मीय रूप से जुड़कर उनके दुख-सुख के क्षणिक सहभागी बन जाते हैं। यहीं पर लेकक को अलीगढ़ के रामलीला मैदान के विनोद चाय वाले का स्मरण हो आता है, जहाँ पर वे अपनी बेरोजगारी के दिनों में बरसों-बरस भूख मिटाने जाते थे।

लेखक के अनुसार – 'मुझे लगा कि जैसे मैं अपने कॉलेज में, अपने शहर में हूँ और जैसे कि अपनी घर में बैठा हूँ। मेरे सामने बैठा यह युवक जैसे मेरा विवाहित-बेरोजगार बेटा है।' राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन के दौरान लेखक की मुलाकात पद्मश्री झलजीत सिंह से हुई जो विभाग के एक बुलावे पर अपने साइकिल स्वयं चलाकर निर्धारित समय से पहले ही कार्यक्रम स्थल पर पहुँच गये थे। लेखक उनके व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित होकर लिखते हैं – 'रोम-रोम से प्रकट होती सादगी। देवदार-सी काया। सम्राटों की तरह लम्बे हाथ और ऊँचे-मजबूत स्कंध।' संगोष्ठी के समापन सत्र में उनके उद्बोधन का पहला वाक्य था – 'आज मैं हिंदी बोलना चाहता हूँ।' आगे, अब भारत देश स्वतंत्र है, ... मणिपुर उसका अभिन्न अंग है। ... हिंदी के बिना भारत गूँगा है ... सो हम हिंदी को मानते हैं। मणिपुरी साहित्य एवं संस्कृति के मर्मज्ञ-अध्येता का यह उद्बोधन निश्चय ही भारतीयता एवं हिंदी के प्रति उनके अगाध प्रेम को अभिव्यक्त करता है।

संगोष्ठी समापन के अगले दिन लेखक अतिथियों के साथ विश्वविद्यालय के सहायक वित्त-अधिकारी श्री बसंता के आवास में चाय-पार्टी हेतु आमंत्रित होते हैं। जिसकी मधुर स्मृतियों का उल्लेख करना वे नहीं भूलते – 'पति-पत्नी दोनों अंदर से चाय, खाद्य पराथों की प्लेट्स लाने में जुट गये। अतिथियों को पलंग-स्टूल-चटाई आदि में बिठाया गया था, इस बीच बातचीत लगातार जारी थी, लोग हिंदी में ही बातचीत कर रहे थे। उस घर की सादगी, ईमानदारी और आत्मीय भाव ने हम सबका ध्यान खींचा। वरना आज तो छोटी-सी नौकरी वाले लाखों के प्लैट्स में रहते हैं और रहने से पहले उसकी साज-सज्जा में लाखों-लाख खर्च कर देते हैं।' लेखक का मन तो मणिपुर की आयरन लेडी इरोम शर्मिला से मिलकर बातचीत करने को था। लेकिन बहुत कोशिशों के बाद भी जब उनसे सम्पर्क नहीं सध पाया तो लेखक को अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक एवं पूर्व में मणिपुर विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष रह चुके डॉ. गम्भीर सिंह के साथ बैठकर इतमीनान से बातचीत करना उचित लगा। बातचीत के सिलसिले में डॉ. गम्भीर जी ने बताया कि – 'नार्थ-ईस्ट की मेन प्राब्लम में गरीबी केन्द्र में है या नहीं? गरीबी से यहाँ कोई नहीं मर रहा, ऐसे मरने वाले बहुत कम हैं। यहॉ पर हर व्यक्ति को लगता है कि हमें मेनस्ट्रीम इंडिया ने नेगलेक्ट किया है।' आगे गम्भीर जी कहते है कि – 'यह सब हमारे अनजानेपर के कारण है। हमारे क्षेत्रीय लीडर भी इसके कारण हो सकते हैं, क्यों कि वे जनता को ठीक से समझा-बता नहीं रहे हैं। मणिपुर में हिंदी भाषा की स्थिति पर बातचीत में उनके अनुसार – 'इंडिया में रहना है तो हिंदी को जानना होगा, इसमें बुरा क्या है? हिंदी फॉर मार्केटिंग, हिंदी फॉर डे-टु-डे कम्युनिकेशन, टूरिज्म, व्यापार की भाषा बनती जा रही है।' सच तो यह है कि मणिपुर का युवा वर्ग हिंदी के प्रति दिनों-दिन आकर्षित हो रहा है। उसका ऐसा मानना है कि यदि मणिपुर से बाहर जाना है तो हिंदी को सीखना-जानना होगा। इसके लिए वह हिंदी फिल्मी गानों, हिंदी फिल्मों व हिंदी धारावाहिकों का सहारा ले रहा है।

मणिपुर के इंफाल शहर में 'हिंदी कोचिंग सेंटर' का खुलना उनके लिए उपयोगी सिद्ध हो रहा है, जहाँ पर जाकर वे स्वाध्याय से हिंदी सीख रहे हैं। हिंदी विभाग में लेखक की मुलाकात विभाग की तीन छात्राओं के साथ पूर्व छात्र गुनेश्वर से होती है। उनसे वार्त्तालाप के क्रम में इरोम शर्मिला के प्रति भारत सरकार की बेरुखी का दर्द गुनेश्वर के कथन में झलकता है – 'एक और बात-बहुत इम्पोर्टेन्ट बात। एक महिला दस साल से भूख-हड़ताल कर रही है। पी.एम. को, सोनिया को – सबको पता हैं। सब जगह जाते हैं – यहाँ कोई एक बार नहीं आया, उसे देखने। हाँ संसद में बैठकर कड़े-से कड़ा कानून बनाने की जरूर सोच रहे हैं।' लेखक गुनेश्वर से जब आगे आने वाले दिनों के बारे में पूछते हैं तो उसका जबाब होता है – 'क्या हम सोचेगा और क्या हमारे सोचने से हो जाएगा? पर यह जरूर है कि अगर सरकार जल्दी नहीं सोचेगी-चेतेगी तो हालात और ज्यादा बिगड़ेगे। यहाँ का यंग और ज्यादा हथियार खरीदेगा और ज्यादा मिलीटेंट बनेगा।' लेकिन हमारी एक रीक्वेस्ट है सर! यह कहकर वहचुप हो गया। लेखक के पूछने पर वह पुन: बोला – 'सर आप दिल्ली जाकर पी. एम. को, होम मिनिस्टर को यहाँ की सही-सही बातें बताना। मिलकर बताना या लिखकर, पर बताना जरूर। उन्हें बताना कि जब सेंट्रल गवर्नमेंट पंजाब-कश्मीर के, यहाँ तक कि पाकिस्तान के मिलीटेंटों से बातें कर सकती है, उनसे सौदा-समझौता कर सकती है तो हमारी इरोम शर्मिला से बातें क्यों नहीं कर सकती? वो तो कभी वॉयलेंस की? लेने-देने की बात भी कभी नहीं किया-तो फिर ...।' लेखक एवं मणिपुरी गुनेश्वर का यह वार्त्तलाप तत्कालीन सरकार की संवेदनहीनता का परिचायक है। विदित हो कि मणिपुर में सुरक्षा बलों को प्राप्त विशेष सशस्त्र बल अधिनियम को समाप्त करने की माँग को लेकर इरोम शर्मिला जी ने आमरण अनशन प्रारम्भ किया था, जो १६ बर्ष बाद ११ नवम्बर, २०१८ को वगैर किसी नतीजे के समाप्त हो गया था। अब इरोम शर्मिला जी सामान्य दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर रहीं हैं। लेकिन २१ वीं सदी के प्रारम्भिक दो-दशकों में वे यहाँ के युवा-संघर्ष की प्रतीक बन गयीं थीं।

मणिपुर प्रवास से वापस अलीगढ़ जाने से पहले एक दिन लेखक मेरे (यशवंत) के आवास पर रात्रि के भोजन के लिए आमंत्रित होते हैं। लेकिन यहाँ पर भी लेखक को गेहूँ के आटे की चपातियाँ भोजन में न मिलने का मलाल बना रहता है। अक्सर रोजी-रोजगार की तलाश में व्यक्ति को जहाँ पर आक्षय मिलता है, वह वहीं के माहौल में ढल जाता है, वहीं का हो जाता है। लेकिन बाहर से आये आगन्तुक के लिए कुछ कष्टों का होना लाजिमी हो जाता है। लेकिन अब स्थितियाँ बड़ी तेजी से बदल रहीं हैं। गेहूँ का पैकेट बंद आटा तथा उपभोग की अन्य वस्तुएँ आसानी से सर्वसुलभ हो रहीं हैं, जिसे बढते बाजारवाद का प्रभाव भी कहा जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों से मणिपुर के निवासियों को सघोषित बंद-रोड रुकावट से भी निजात मिल रही है, जिससे स्थितियों में आशाजनक सुधार हो रहा है। मणिपुर के सीमावर्ती शहर जिरीबाम से राजधानी इंफाल तक की रेल-परियोजना के पूर्ण होने पर स्थितियों के सामान्य होने में देर नहीं लगेगी।